सिलसिले रह जायेंगे

सिलसिले रह जायेंगे

अंकित चहल 'विशेष'

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
335, देवनगर, मोदीपुरम, मेरठ, उ.प्र., पिन-250001
E-mail : samdarshi.prakashan@gmail.com | Mob. : 9599323508
WEBSITE: SAMDARSHIPRAKASHAN.IN

शीर्षक	:	**सिलसिले रह जायेंगे**
लेखक का नाम	:	अंकित चहल 'विशेष'
प्रकाशक	:	समदर्शी प्रकाशन
प्रकाशक का पता	:	335, देव नगर, मोदीपुरम मेरठ, उत्तर प्रदेश - 250001 मोबाइल नम्बर : 9599323508
संस्करण	:	प्रथम (मार्च 2021)
मुद्रक	:	समदर्शी प्रकाशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश
आई एस बी एन नम्बर	:	978-93-90481-52-1
सर्वाधिकार ©	:	अंकित चहल 'विशेष'

SILSILE REH JAYENGE POEMS Written by Ankit Chahl 'Vishesh'
₹150/-

भारत माता को समर्पित

मैं अदना सा लिखने वाला, क्या तुम पर लिख पाऊँगा।
पाकर तेरी गोद विधाता स्वयं धन्य हो जाता है।

भूमिका

क्रिकेट के मैदान में पहली बार कोई अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने के लिए पैर रखने वाला खिलाड़ी उत्साहित होता है, प्रसन्न होता है, गर्वित होता है लेकिन साथ ही साथ चौकन्ना भी होता है। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी वे होते हैं, जो अपने हर मैच को अपने पहले बड़े मैच की तरह खेलते हैं। जो लोग लेखन के प्रति ईमानदार होते हैं, वो अपने हर लिखे को अपना पहला बड़ा लेखन मान कर लिखते हैं।

आदतन लिखने वालों, इरादतन लिखने वालों और दफ़'अतन लिखने वालों की श्रेणी से अलग कुछ लोग होते हैं, जो इसलिए लिखते हैं कि उन्हें कुछ कहना होता है। लेकिन वो कहने की जल्दी में नहीं हैं। वो आमद की प्रतीक्षा करते हैं। आमद की प्रतीक्षा कठिन है। यह एक सर्जक की प्रसव-पीड़ा है।

यह त्वरित-सूचना का काल है। सूचनाओं की गति इतनी तेज़ है कि अपने फोन में आई हुई किसी एक बात को पढ़ो-समझो, इस से पहले तीन और नई बातें सामने होती हैं। लिखने वाले, पढ़ने वाले, सब जल्दी में हैं। ऐसे में हर ओर से द्रुत गति से आ रही रचनाओं के चौतरफ़ा तूफ़ान में खड़े हो कर आमद की प्रतीक्षा करने का कोई तरीका कम से कम विज्ञान ने तो नहीं बताया है; यह कला है। एक ऐसा कलाकार जब कलम का रचनाकार बनता है, तो वो श्रेष्ठ लिखता है।

अनुजवत अंकित चहल एक ऐसे ही श्रेष्ठ कवि हैं। लगभग 15 वर्षों से कविता लिख रहे अंकित अपनी दूसरी पुस्तक 'सिलसिले रह जायेंगे' के साथ उपस्थित हैं। उनके अनवरत अध्ययन और ईश्वरीय कृपा से उनकी कविता की गुणवत्ता लगातार बढ़ती दिखाई देती है। वो रोज़ सीख रहे हैं, रोज़ पढ़ रहे हैं, रोज़ श्रेष्ठ हो रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक उनके बड़े साहित्यिक जीवन के रास्ते में एक पड़ाव भर है। लेकिन पड़ाव का अपना महत्व है। वह आपकी विजय-यात्रा का एक अंश पूरा होने का द्योतक है। पड़ाव एक अंतरिम उपलब्धि का भान भी देते हैं, और आगे की बड़ी यात्रा के लिए ऊर्जा भी देते हैं। इस पड़ाव तक पहुँचने के लिए अंकित चहल को बहुत-बहुत बधाई और आगे के साहित्यिक जीवन के लिए बहुत शुभकामनाएँ।

प्रबुद्ध सौरभ
(प्रसिद्ध कवि, शायर)

लेखकीय

दोस्तों नमस्कार, आप सबको अपनी दूसरी पुस्तक 'सिलसिले रह जायेंगे' सौंपते हुए बड़े आनन्द की अनुभूति हो रही है। पहली पुस्तक 'इंसान बिकता हैं' को आप सभी ने, जो प्यार दिया है, उसके लिए आप सबका हृदय से आभारी हूँ। इस बार भी मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि मेरी इस कृति को भी आपका नेह दुलार मिलेगा।

विभिन्न विधाओं से सजी इस पुस्तक को पढ़कर निश्चित ही आपको, साहित्य के प्रति मेरे समर्पण का आभास होगा।

मुक्तक, दोहे, गीत, ग़ज़ल और छंद से सजी, मेरी पुस्तक, आपके पाठक मन की समाज के हर छोटे से छोटे पहलू से भेंट करायेगी ।

मेरा मत है कि व्यवसायिकता के इस दौर में, कविता की प्रासंगिकता कहीं अधिक बढ़ गई है। कविता के माध्यम से हम मृतप्राय सामाजिक मूल्यों को संजीवनी देने का कार्य कर सकते हैं और कविता वर्तमान में नैतिक आधार को मज़बूत करने में महती भूमिका निभा सकती है।

मेरी लिए कविता हास परिहास नहीं अपितु संस्कारों और मूल्यों की भाषा है। मैं इन्हीं विचारों, भावों को कविता में ढालने का प्रयास करता हूँ।

मैं अपने माता-पिता, भाई और उनकी धर्मपत्नी, दोनों बहनें और जीजाजी, चाचा चाचीजी, सबका आभार व्यक्त करता हूँ।

आपके सहयोग से, मैं अपने मन का कार्य बिना अड़चनों और उलझनों के कर पा रहा हूँ।

अंत में समदर्शी प्रकाशन और सम्पादक महोदय श्री योगेश समदर्शी जी का हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने इस पुस्तक को मूर्त रूप देने का कार्य किया और यथाशीघ्र पुस्तक आप तक पहुँचाने में प्रतिबद्धता दिखाई।

मुसलसल काम में, हम डूबकर पल छिन निकालेंगे।
ये कोशिश है के दिल से, शब्द नामुमकिन निकालेंगे।
हमारे हौंसलों से बस, यही आवाज़ आती है,
मथेंगे मुश्किलों को, और अच्छे दिन निकालेंगे।

-अंकित चहल 'विशेष'
ग्राम मोरटा ग़ाज़ियाबाद
उत्तर प्रदेश (201003)
मोबाइल-:- 9953401798

मेरे मुक्तक

1.

हर मुश्किल से हँसते-हँसते, निकल रहे हैं।
एक रस्ते से कई रस्ते, निकल रहे हैं।
जहाँ अकेला छोड़ दिया था, तुमनें मुझको,
उसी जगह से हर दिन दस्ते, निकल रहे हैं।

2.

फूल सारे खुश्बुओं से बिन मिले रह जायेंगे।
बाग में इन तितलियों के दाख़िले रह जायेंगे।
दूरियों के जो दिए फ़रमान उन पर सोचना,
हम निकल आये तो तन्हा क़ाफ़िले रह जायेंगे।

3.

सिर्फ़ ख़्वाबों में पुरानें, सिलसिले रह जायेंगे।
दरमियाँ मेरे तुम्हारे, बस गिले रह जायेंगे।
क्या पता था इश्क़ में, इस दौर से गुजरेंगे हम,
सामनें होते हुए भी, बिन मिले रह जायेंगे।

4.

एक अलहदा ख़ुद में पैदा, हमने है अंदाज़ किया।
अपनी तन्हाईं को अपना, हमने है हमराज़ किया।
हिम्मत नहीं जुटा पाए वो, जिन रस्तों पर चलने की,
उन रस्तों से इस जीवन का, हमने है आग़ाज़ किया।

5.

रेशमी पाजेब की झंकार का हम क्या करें।
तुम हमें रोटी खिलाओ प्यार का हम क्या करें।
झोपड़ी में जल रही है एक डिबिया मौज से,
चाँद तारों से सजे संसार का हम क्या करें।

6.

बाद तुम्हारे इन आँखों नें, सपन सलोने खोए हैं।
ओढ़ अकेलेपन की चादर, अनगिन रातें रोए हैं।
आहें, आँसू, तड़प, जुदाई, और तुम्हारी तस्वीरें,
हम तकिए के नीचे जाने, क्या-क्या रखकर सोए हैं।

7.

सभी कुछ ख़र्च कर डाला, बचाया ही नहीं हमनें।
मगर अहस़ान औरों पर, जताया ही नहीं हमनें।
हमेशा दूसरों को ही, मनाने में रहे हम तो,
यही सच है कभी ख़ुद को, मनाया ही नहीं हमनें।

8.

संघर्षी बाँहों में जय के, किस्से तमाम पलते हैं।
मंज़िल से पहले रस्तों पर, अनगिन मक़ाम पलते हैं।
दूर हटाकर मजबूरी, मज़दूरी से पढ़ने वालों,
दुनिया देख रही है तुम में, कितने कलाम पलते हैं।

9.

जो अश्क़ों से आँखें धोकर बैठे हैं।
सच में अपना कुछ तो खोकर बैठे हैं।
जिनके हाथों सौंप रहे हो तुम ख़ुद को,
पहले ही औरों के होकर बैठे हैं।

10.

साँसों की कल-कल कहती है।
होंठों की हलचल कहती है।
नित दो आँखें फिसल रही हैं,
ये तन की मलमल कहती है।

11.

पिताजी और दादा की धरोहर बेचकर खुश हैं।
न जानें क्यों वो अपने गाँव का घर बेचकर खुश हैं।
बधाई दे रहे हर चीज़ को तक़सीम करने पर,
सुहागिन माँ के गहनें तक सहोदर बेचकर खुश हैं।

12.

कईं रतजगे जब मुसलसल हुए हैं।
मेरे चन्द मिसरे मुक़म्मल हुए हैं।
मुहब्बत की तह तक पहुँचने में देखो,
कईं लोग शाइर व पागल हुए हैं।

13.

सफलता की कभी फिर मेज़बानी तक नहीं पहुँचे।
पसीनें के अगर गौहर पेशानी तक नहीं पहुँचे।
यही आवाज़ आती है मुसलसल बहते दरिया से
भला कैसे वो प्यासे थे, जो पानी तक नहीं पहुँचे।

14.

ये दौरे तंगहाली है, कोई मुजरा नहीं है जी।
अभी ज़िन्दा है बदकिस्मत, अभी गुजरा नहीं है जी।
बनाकर महल चौबारे खुले में रह रहा है जो,
यहाँ पर उस के हिस्से का, कहीं हुजरा नहीं है जी।

15.

मुसलसल काम में, हम डूबकर पल छिन निकालेंगे।
ये कोशिश है के दिल से, शब्द नामुमकिन निकालेंगे।
हमारे हौंसलों से बस, यही आवाज़ आती है,
मथेंगे मुश्किलों को, और अच्छे दिन निकालेंगे।

16.

अभावों के ये आघातों में जीवन ढूँढ़ लेती है।
ज़रूरत बीनकर कचरे को साधन ढूँढ़ लेती है।
बड़ी बारीक रस्सी पर चले नटनी सी इतराकर,
ग़रीबी बेबसी के दौर में फ़न ढूँढ़ लेती है।

17.

चरख़ी मुझे थमाकर गुड्डू, खूब पतंग उडाता था।
मेरी हर उलझन का धागा, पल में काट दिखाता था।
वो बचपन की यारी अपनी, सब रिश्तों पर भारी थी,
मेरे ख़ातिर अपने मम्मी पापा से लड़ जाता था।

18.

जड़ रहे चेतना को जगाते नहीं।
क्यूँ सृजन की विरासत बढ़ाते नहीं।
कर्मयोगी बनो कृष्ण के वंशजों,
भाग्य पर व्यर्थ आँसू बहाते नहीं।

19.

रस्तों के हर एक शज़र को, फिर छाँव को सज़दा करो।
ओ, शहर से लौटने वालों, इस गाँव को सजदा करो।
हमको देखो बिन पैरों के, कैसे कितने सफ़र किए,
मंज़िल तक पहुँचाने वाले, हर पाँव को सजदा करो।

20.

ख़ुदा तक जब इबादत का इशारा पहुँच जायेगा।
ये तय है फिर बुलंदी पर सितारा पहुँच जायेगा।
लड़ेंगे हौसले हालात से किस्मत बदल देंगे,
तू चाहेगा तो मंज़िल तक खटारा पहुँच जायेगा।

FOR READ MORE PLEASE PURCHASE THIS BOOK NOW